स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

यह महिलाओं के लिए शिक्षण श्रृंखला का तीसरा भाग है। पहले और दूसरे भाग में हमने देखा कि क्यों प्रभु यीशु ने कुछ अवसरों पर महिलाओं को उनके व्यक्तिगत नाम से नहीं, बल्कि “स्त्री” या “पुत्री” जैसे शीर्षकों से संबोधित किया। इसके पीछे एक दिव्य कारण है। यदि आपने अभी तक वे शिक्षाएँ नहीं पढ़ी हैं, तो हमें संदेश भेजें, हम आपको भेज देंगे।

आज हम आगे बढ़ेंगे और देखेंगे कि क्यों कुछ महिलाओं को यीशु ने “माता” कहकर संबोधित किया।

“माता” कहलाना आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह
माता कहलाना कोई साधारण बात नहीं है; यह आत्मिक परिपक्वता का पद है। केवल नाम से कोई माता नहीं बनता। माता वह होती है जिसने जन्म दिया हो या जिसने दूसरों को पालने-पोसने और मार्गदर्शन की ज़िम्मेदारी उठाई हो।

यीशु ने अपने सांसारिक सेवकाई में बहुत-सी स्त्रियों से भेंट की। पर सबको “पुत्री” नहीं कहा गया, और सबको “माता” भी नहीं कहा गया। यह पदवी केवल उन्हीं के लिए थी जिन्होंने आत्मिक ऊँचाई पाई थी।

अब हम शास्त्र से कुछ उदाहरण देखेंगे कि कौन-सी योग्यताएँ किसी स्त्री को यीशु की दृष्टि में “माता” बनाती हैं।

स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

1. कनानी स्त्री – विश्वास और मध्यस्थता की माता
मत्ती 15:21–28

“…और देखो, उस देश की एक कनानी स्त्री आकर पुकारने लगी, ‘हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर; मेरी बेटी को
दुष्टात्मा बुरी तरह सताती है।’… यीशु ने कहा, ‘हे नारी,
तेरा विश्वास महान है! जैसा तू चाहती है वैसा ही तेरे लिये
हो।’ और उसी घड़ी उसकी बेटी अच्छी हो गई।”

ध्यान दीजिए: यह स्त्री अपने लिए नहीं, बल्कि अपनी बेटी के लिए यीशु के पास आई। उसे नज़रअंदाज़ किया गया, ठुकराया गया, यहाँ तक कि कुत्ते से भी तुलना की गई, फिर भी उसने हार नहीं मानी। यही एक माता का हृदय है—दूसरों का बोझ अपने जैसा उठाना।

उसका विश्वास, दीनता और प्रार्थना ने उसे यीशु की दृष्टि में “माता” बना दिया—एक आत्मिक माता जो दूसरों के लिए बीच में खड़ी होती है।

2. मरियम, यीशु की माता – दूसरों की आवश्यकताओं की चिन्ता करने वाली माता
यूहन्ना 2:1–4

स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह हुआ; और यीशु की माता
वहाँ थी। यीशु और उसके चेले भी विवाह में बुलाए गए थे। जब
दाखरस कम पड़ गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, ‘उनके पास
दाखरस नहीं है।’ यीशु ने उससे कहा, ‘हे नारी, मुझे तुझसे क्या काम? मेरा समय अभी नहीं आया।’”

मरियम ने देखा कि घराने पर लज्जा आ सकती है, इसलिए उसने यीशु को कहा, जबकि यह उसका व्यक्तिगत विषय नहीं था। यह उसकी करुणा और परिपक्वता का प्रमाण था।

उसकी पहल के कारण यीशु ने अपना पहला चमत्कार किया।

3. मरियम मगदलीनी – सुसमाचार संदेश की माता
यूहन्ना 20:11–17

“…यीशु ने उससे कहा, ‘हे नारी, तू क्यों रो रही है? किसे ढूँढ़ रही है?’… यीशु ने उससे कहा, ‘मरियम!’… यीशु ने उससे कहा, ‘मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास नहीं गया हूँ; पर तू जाकर मेरे भाइयों से कह, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास

स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

चढ़ता हूँ।’”

मरियम मगदलीनी पुनरुत्थित मसीह को देखने वाली पहली व्यक्ति थी। उसे सुसमाचार का सबसे बड़ा संदेश सौंपा गया—पुनरुत्थान का संदेश।

क्यों?
क्योंकि वह विश्वासयोग्य रही। जबकि अन्य भाग गए, वह ठहरी रही। यही आत्मिक माता का गुण है।

आत्मिक माताएँ: सारा, रिबका, एलिज़ाबेथ और मरियम
ये स्त्रियाँ विश्वास में परिपक्व हुईं, परमेश्वर के साथ चलीं और उसकी योजनाओं में राष्ट्रों को गढ़ने, परिवारों का नेतृत्व करने और आत्मिक मार्गदर्शन देने के लिए प्रयोग की गईं।

बहन, आज तू कहाँ खड़ी है?
जब प्रभु तुझे देखता है, तो तुझे किस रूप में पहचानता है?

एक लड़की के रूप में?

एक स्त्री के रूप में?

स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

या आत्मा में एक माता के रूप में?

महान प्रेरितों को देखने से पहले, परमेश्वर की पवित्र स्त्रियों के जीवन को अध्ययन कर। यही तेरे बुलाहट को बदल सकता है।

“माता” कहलाने की चाह रख
यह एक बड़ी महिमा है जो यीशु किसी स्त्री को दे सकता है—दूसरों की आत्माओं की देखभाल करना, प्रार्थना करना, शिष्यत्व करना, और सुसमाचार को ढोना। यही आत्मिक माता का बुलाहट है।

“वैसे ही बूढ़ी औरतें चाल-चलन में पवित्र हों… और अच्छी
बातें सिखाएँ, ताकि जवान औरतों को सिखाएँ…” (तीतुस 2:3–4)

तेरा बुलाहट तेरे सोच से ऊँचा है
उठ, हे परमेश्वर की स्त्री। आत्मिक परिपक्वता में कदम रख। माता बन—सिर्फ उम्र या जैविक कारण से नहीं, बल्कि विश्वास, मध्यस्थता और आत्मिक ज़िम्मेदारी के कारण।

प्रभु तुझे आशीष दे और तुझे अपनी विश्वासयोग्य माताओं में गिने।

स्त्री,पुत्री, माता (भाग 3)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

मरानाथा — प्रभु आ रहा है!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp